माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, महाविद्यालयीन, पदविका परीक्षा, स्पर्धा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिये तथा अध्यापक, मार्गदर्शकों के लिये बहु उपयोगी संदर्भ संपन्न हिंदी व्याकरण की प्रामाणिक किताब

हिंदी व्याकरण

प्रा. डॉ. के. पी. शहा

एम्. ए. (हिंदी), एम्. ए. (मराठी)
एम्. ए. (इतिहास, समाजशास्त्र)
पीएच्. डी. (हिंदी) साहित्यरत्न (प्रयाग)

ॐ पब्लिकेशन्स्

प्रमुख वितरक

अजब डिस्ट्रिब्युटर्स

६७८-ई, निदान हॉस्पिटल के पास,
शाहूपुरी, २ री गल्ली, कोल्हापुर

हिंदी व्याकरण : Hindi Vyakaran
प्रा. डॉ. के. पी. शहा

© सौ. हिमा के. शहा
'हिमाली' 73 अंबाई डिफेन्स सोसायटी,
प्रतिभानगर के पास,
कोल्हापुर - 416 008.

प्रकाशक
ॐ पब्लिकेशन्स्
678, सृष्टी विष्टा, निदान हॉस्पिटल के पास,
शाहूपुरी २ री गल्ली, कोल्हापुर.
मो : 968 9995 300

अक्षरजुळणी
रावजी देसाई

मुखपृष्ठ
चित्रमित्र पब्लिसिटी, कोल्हापुर.

मुद्रक
श्री ज्योतिर्लिंग ऑफसेट, कोल्हापुर.

आवृत्ती
सप्टेंबर, 2012

कीमत
180/-

मन की बात

प्रस्तुत पुस्तक 'हिंदी व्याकरण' नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गयी एक प्रामाणिक पुस्तक है । आज-कल विद्यार्थियों को रटने के बारे में किसी भी हालत मे रूची नहीं रही । अधिक कष्ट न उठाते हुए सहजता से विषय समझ में आ जाय इस ओर उनका अधिकतर ध्यान रहता हैं । इन बातों को ध्यान में रखते हुए इस किताब को व्यवहारिक दृष्टिकोन से सरल एवम् रोचक बनाने का हमने सफल प्रयास किया हैं । इस दृष्टि से विषय बिंदुओं को सरल एवम् ग्राह्य बनाने के लिए उसे विविध खंडो में विभाजित किया है ।

सच तो यह है कि साहित्य सौंदर्य का यथार्थ अनुभव व्याकरण के अभाव में हो ही नहीं सकता। कुछ निश्चित नियमों का अनुसरण किए बीना लेखक अथवा वक्ता अपने भावों को शुध्द, स्पष्ट, प्रभावशाली और सुरूचिपूर्ण बनाने में सफल हो नहीं सकता ।

अपनी मातृभाषा से भिन्न किसी भी भाषा के अध्ययन के लिये व्याकरण की आवश्यकता मानी गयी है । व्याकरण द्वारा ही भाषा के प्रचलित रूपों को बोलने-लिखने में, शुद्धता पूर्वक व्यवहार में लाने का मार्गदर्शन होता है । इन विशेषताओं के कारण ही वैयाकरण व्याकरण को किसी भाषा के लिखित और बोलचाल के रूपों को यथार्थत: समझानेवाला शास्त्र कहते हैं । समाज जिस प्रयोग को स्वीकृत कर लेता है वह व्याकरण को भी ग्राह्य होता है । व्याकरणशास्त्र भाषा का प्रगति विरोधी नही है, बल्कि वह भाषा का अनुयायी है । और विशेषत: भाषा के स्वरूप का अध्ययन करनेवालों के लिए, भाषा के लिए व्याकरण अत्यावश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है । इस कारण व्याकरण की रचना और उसका अध्ययन भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है । अपने परिवेश में व्याकरण का प्रयोजन है, और उस प्रयोजन के अनुसार व्याकरण अन्य शास्त्रों की भाँति एक आवश्यक शास्त्र है और कलाओं की तरह कला है ।

मै गत 35 सालों से हिंदीका अध्ययन तथा अध्यापन कर रहा हूँ । इस दौरान जब-जब व्याकरण पढ़ाना पडा तब-तब विद्यार्थियों की दृष्टि से कुछ कठनाईयाँ महसुस हुई । एक तो व्याकरण विषय सामान्य छात्रों को समझने के लिये कठिन तथा

नीरस होता है । उस पर व्याकरण की जो किताबें उपलब्ध है उनमें से कुछ भाषा वैज्ञानिक ढंग से लिखी है और कुछ संस्कृत या अंग्रेजी के अनुकरण से लिखी हुई लगती है । इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक को अधिक से अधिक सहज, सरल और स्वाभाविक बनाने की चेष्टा की गयी है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रणयन में जिन विद्वानों की कृतियों से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहाय्यता ली गयी है, उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना हम अपना परम कर्तव्य समझते है । उन सब को सस्नेह याद करता हूँ जिनके कारण, जिनकी प्रेरणा से और जिनके प्रयत्नों से यह महत्त्त कार्य पूरा हुआ । विशेषकर प्रा. किरण चौगुले, प्रा. सौ. सरोज कांबळे आदि का सहयोग महत्त्वपूर्ण रहा । इसे पुस्तक का रूप प्रदान करने में श्री. शितल मेहता को हम धन्यवाद देते है । जिन्होंने बडी ही तत्परता एवम् सुरूचि पूर्ण ढंग से इसे सुंदर तथा आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया ।

2 सितंबर 2005 **डॉ. के. पी. शहा**

कोल्हापुर.

अनुक्रमणिका

1.	व्याकरण	-	7
2.	वर्ण	-	9
3.	शब्द	-	12
4.	सर्वनाम	-	20
5.	संज्ञा	-	22
6.	क्रिया	-	24
7.	काल	-	31
8.	वाच्य और प्रयोग	-	37
9.	अविकारी शब्द (अव्यय)	-	39
10.	लिंग विचार	-	44
11.	वचन विचार	-	56
12.	विशेषण	-	62
13.	कारक और विभक्तियाँ	-	71
14.	कृदन्त	-	77
15.	तद्धित	-	89
16.	हिंदी भाषा की शब्द निर्माण संबंधी क्षमता	-	98
17.	प्रत्यय	-	109
18.	वाक्य के प्रकार	-	112
19.	वाक्य (वाक्य) प्रथक्करण	-	116
20.	वाक्य-विग्रह	-	117
21.	वाक्य परिवर्तन	-	123
22.	अन्वय	-	127
23.	पदान्वय	-	129
24.	पदक्रम	-	134
25.	समास	-	135
26.	संधि	-	144
27.	पर्यायवाची शब्द	-	159
28.	अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द	-	168
29.	विपरीतार्थक शब्द	-	180
30.	समानार्थक शब्द	-	187
31.	विशेष अर्थों में प्रयुक्त संख्यावाचक शब्द	-	199
32.	श्रुति - सम शब्दों के अर्थ-भेद	-	203
33.	ध्वन्यात्मक शब्द	-	209
34.	समूहार्तक शब्द	-	210
35.	एक शब्द और विभिन्न प्रयोग	-	213
36.	सम्मानसूचक शब्द	-	217
37.	विशेष भावसूचक शब्द	-	219
38.	अंकलेखन	-	221
39.	विरामचिन्ह	-	224
40.	अन्तर्कथाए	-	234
41.	मुहावरे और कहावत	-	239
42.	कहावतें	-	250

❑ ❑ ❑

हिंदी व्याकरण

1. व्याकरण

व्याकरण शब्द वि (उपसर्ग) + आ (उपसर्ग) + कृ (धातु) से बना है। इस शब्द का अर्थ है- पृथक्-पृथक् करना- विश्लेषण करना। **व्याकरण वह शास्त्र है, जो भाषा का विश्लेषण करके उसके स्वरूप को प्रकट करता है और भाषा को शुद्ध रूप में पढने, समझने, बोलने और लिखने की विधि सिखलाता है।**

व्याकरण के अध्ययन से लाभ

पहले कहा जा चुका है कि सभी विषयों में तथा लोक-व्यवहार-व्यापार में कुशलता प्राप्त करने का अमोघ साधन भाषा-ज्ञान है।

निश्चित रूप में, तीव्र वेग से तथा आवश्यकता के सर्वथा अनुरूप भाषा-ज्ञान प्राप्त करने का साधन व्याकरण है।

आचार्य रामचन्द्र वर्मा ने अपनी पुस्तक **'अच्छी हिन्दी'** में लिखा है : ''अच्छी भाषा लोगों पर हमारी योग्यता प्रकट करती है, समाज में हमारा सम्मान बढ़ाती है, और हमारे बहुत से काम सहज में पूरे करती है। दूसरों की अशुद्ध, भद्दी या बेमुहावरा भाषा सुनकर हम मन-ही-मन हँसते हैं और उन्हें मूर्ख समझते हैं। चाहे उस समय हम किसी कारण से चुप ही क्यों न रहें, पर अशुद्ध या भद्दी भाषा बोलने या लिखने वालों के प्रति हमारी श्रद्धा अवश्य कम हो जाती है। हम समझ लेते हैं कि इन्हें शुद्ध बोलना या लिखना तक नहीं आता। यदि इनमें से कोई बात न हो, तो भी कभी-कभी अच्छे, योग्य और सम्मानित व्यक्तियों को भी अपनी भाषा सम्बन्धी सामान्य चूक के लिए सुविज्ञ समाज के सामने लज्जित तो होना ही पडता है।''

व्याकरण वह शास्त्र है, जिसके अध्ययन द्वारा हम किसी भाषा का उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं तथा उस भाषा के प्रयोग में कुशलता प्राप्त कर सकते हैं।

व्याकरण का काम है किसी भाषा की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों, शब्दांशों आदि का ज्ञान कराकर वाक्य-रचना की समीचीन विधि बतलाना, जिससे हम बोलने तथा लिखने में त्रुटिहीन भाषा का प्रयोग कर सकें। व्याकरण हमारे सम्मुख भाषा की रचना करने वाले अंगों-उपांगों तथा भाषा के निरन्तर प्रवाह का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है।

व्याकरण का उद्देश्य है-शब्दों का विश्लेषण करना, शुद्ध शब्दों को अशुद्ध शब्दों से पृथक् करना। इस प्रकार व्याकरण भाषा को विकृत होने से बचाता है। व्याकरण का अध्ययन करने के उपरान्त व्यक्ति में आत्मविश्वास जागता है, जिससे वह भाषा का प्रयोग धडल्ले से करने लगता है। उसका यह संकोच तथा भय दूर हो जाता है कि कहीं गलती न हो जाये। व्याकरण का मनोयोगपूर्वक अध्ययन करनेवाला विद्यार्थी भाषा-ज्ञान में तीव्र वेग से दक्षता प्राप्त करता है। व्याकरण द्वारा भाषा के शुद्ध स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करने का कार्य अल्प समय में ही हो जाता है। जिस समय विद्यार्थी व्याकरण के अध्ययन में विचारपूर्ण संकल्प द्वारा प्रवृत्त होता है, तब शीघ्र ही भाषा के शुद्ध स्वरूप के ज्ञान को हृदयंगम कर लेता है। किसी भाषा के मानक रूप का परिज्ञान व्याकरण की सहायता से ही हो सकता है।

1) वर्ण विचार

संसार की कोई भी भाषा प्रकृति प्रदत्त नहीं, अपितु मानव की सतत् जिज्ञासा और निरंतर अन्वेषण के फलस्वरूप ही सामयिकी-भाषा का सुष्ठु रूप सामने आ गया है। यह बात भाषा के अभिव्यक्ति तथा लेखन, दोनों ही पक्षों को इंगित करती है। भाषा के अभाव में आदि युग का मानव परिवार सम्भवत: संकेतों से ही कार्य चलाता रहा। कालान्तर में निश्चित अर्थों के लिए मान्यता दे दी, मानव प्रकृति के अनुसार हर क्लिष्ट कार्य सरलीकरण की ओर अग्रसर होता है। भाषा भी संकेतों के सरलीकरण और अभिव्यंजना के अधिक स्पष्टीकरण हेतु ही निबंधित हुई है। इसलिए भाषा को प्रतीकों का समूह कहा जाता है। वैसे भाषा कुछ निश्चित ध्वनियों के समूह पर आधारित एक स्वच्छन्द पद्धति है, जो एक निश्चित क्रम में आबद्ध होकर विचारों का विनिमय करती है।

भाषा की समायोजना में अनेक उपकरणों का योग रहता है, इसकी प्राथमिक अवस्था वर्णों पर केन्द्रित रहती है। वर्णों के ही एक निश्चित समूह पर भाषा का वृत्त आरूढ रहता है, यहाँ प्रथम हम वर्णों पर ही विचार करना अधिक समीचीन समझते हैं।

2) उच्चारण एवं वर्तनी : जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि मनुष्य एक विचारशील प्राणी है। अपने विचारों को, भावों को भी बोलकर अभिव्यक्त करता है तथा कभी लिखकर। बोलना या लिखना इन दोनों क्रियाओं के लिये उसको भाषा की आवश्यकता पडती है। 'वर्तनी' को जिसे अंग्रेजी में 'Spelling' कहते हैं, सम्बन्ध इसी लिखित भाषा से है। इसी सम्बन्ध को ध्यान से रखते हुये 'वर्तनी' शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है -

''भाषा-विशेष में किसी शब्द के लिखित रूप में प्रयुक्त क्रम में वर्ण समूह।''

- डॉ. भोलानाथ तिवारी

इस प्रकार **'वर्तनी' एक विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित वह वर्ण समूह है, जो किसी भाषा विशेष में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का निर्माण करता है।** इस परिभाषा में प्रयुक्त शब्द 'वर्णसमूह' अत्यन्त महत्वपूर्ण है। परन्तु इसका परिचय प्राप्त करने से पूर्व उच्चारण तथा वर्तनी के सम्बन्ध का ज्ञान उचित होगा।

3) वर्तनी तथा उच्चारण : व्यक्ति की यह सहज इच्छा होती है कि वह अपने विचारों को, अपनी भावनाओं को लिखकर अभिव्यक्त करे। इसके लिए वह 'भाषा' का सहारा लेता है। भाषा की

प्रभाव-शक्ति वर्तनी की शुद्धता पर निर्भर करती है तथा वर्तनी की शुद्धता सम्यक् उच्चारण पर। मान लीजिए की कोई व्यक्ति यह कहना चाहता है कि 'चन्द्रिका' जी के मधुर स्वर की बड़ाई तो उनके स्वजन अक्सर करते हैं। 'परन्तु 'द' का 'ड' तथा 'स' का 'श' उच्चारण करने वाला व्यक्ति इसे यों कहेगा; चण्डिका जी के मधुर स्वर की बड़ाई तो उनके श्वजन अक्सर करते हैं।'

अब देखिये कहाँ 'चण्डिका' कहाँ स्वभाव की 'मधुरता' ? इसी प्रकार कहाँ 'स्वजन' (आत्मीय लोग) और कहाँ 'श्वजन' (कुत्ता) ?

इस प्रकार यह सहज में ही कहा जा सकता है कि उच्चारण तथा वर्तनी का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है, अत: भाषा की शुद्धता के लिए उच्चारण तथा वर्तनी का ज्ञान बहुत आवश्यक है। फिर भी हिन्दी तो इस प्रकार की भाषा है कि जिसमें, वह लिखते हैं जो बोलते हैं अर्थात् जिस प्रकार की भाषा-ध्वनि मुखावयवों से उच्चारित होती है उसी प्रकार लिपि-बद्ध भी होती है। इसीलिए तथा वर्तनी के शुद्ध प्रयोग के लिए 'वर्णसमूह' (वर्तनी की परिभाषा देखिये) का सम्यक् ज्ञान आवश्यक है।

2. वर्ण

अक्षर के पर्ययवाची शब्द को वर्ण कहा जाता है। अक्षर (अ + क्षर) अर्थात् जिसका क्षय न हो अथवा जो टूक टूक न हो सके उसे अक्षर कहते हैं। 'किसी भाषा के अक्षरों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।' डॉ. हरदेव बाहरी ने वर्ण तथा अक्षरों में भिन्नता बतलाई है 'प्राय: लोग ध्वनि वर्ण और अक्षर का एक ही अर्थ लेते हैं, किन्तु व्याकरण शास्त्र में इनके अर्थों में अंतर कर लिया गया है।' इन्हीं के अनुसार, 'अ, आ, ई, ऊ आदि अथवा क, ख, ग, आदि को जब हम मुँह से बोलते हैं, तो इन्हें ध्वनियाँ कहते हैं, इनके लिखित रूप को भाषा कहते हैं। वर्ण को ध्वनि चिन्ह कह सकते हैं। अंग्रेजी () और हिन्दी में 'काम' ध्वनिगत अन्तर नहीं पाते। दोनों में क (बडा) और म ध्वनि सुनाई देती है; किन्तु लिखने में दोनों भाषाओं के चिन्ह बिल्कुल अलग-अलग हैं। हम कह सकते हैं कि इनमें ध्वनि भेद तो नहीं हैं, किन्तु वर्ण-भेद है। ध्वनि बोलने और सुनने में आती है, वर्ण देखने और पढने-लिखने में आते हैं। इन वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं, उसकी लिपि का नाम 'देवनागरी' है।'

वर्ण की परिभाषा : किसी भाषा से प्रयुक्त होने वाली उस मूल या छोटी से छोटी ध्वनि (या उसके द्योतक चिह्न) को वर्ण कहते हैं, जिसके खण्ड न हो सकें।

इस प्रकार 'वर्ण' वह सबसे छोटी भाषा-ध्वनि है जिसे पुन: विखण्डित नहीं किया जा सकता हैं। जैसे- अ, इ, उ, क्, ख्, इत्यादि हिन्दी की भाषा-ध्वनियाँ या वर्ण हैं।वर्ण को 'अक्षर' भी कहते हैं।

हिंदी की वर्णमाला : भाषा के अक्षरों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। किसी भी शब्द का विभाजन किया जाए, तो उसे विभिन्न अक्षरों में विभाजित किया जा सकता है। हर एक पूर्ण अक्षर से अलग अलग ध्वनि निकलती है। इन विभिन्न ध्वनियों को लिखित रूप में कुछ प्रतीक रूप नाम दिये हैं। इन प्रतीक नामों को वर्ण कहा जाता है। एक वर्ण एक ध्वनि प्रतीक बन जाता है। जैसे 'शीला' शब्द है, जिसमें दो ध्वनियाँ हैं। एक ध्वनि है 'शी' दूसरी ध्वनि है 'ला'। इन दो ध्वनियों का

विश्लेषण आगे चलकर चार अंशों में किया जा सकता है - श् + ई + ल् + आ = शीला। इस तरह वर्णों को विभिन्न अंशों में विभाजित करने के बाद एक एक वर्ण के दो दो हिस्से मिलते हैं। इन दो हिस्सों को स्वर तथा व्यंजन कहते हैं।

(अ) स्वर : स्वर का उच्चारण साँस द्वारा होता है। इसके उच्चारण के लिए किसी दूसरे वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं होती है। हिंदी भाषा में स्वर-वर्ण ग्यारह हैं।

(1) ऱ्हस्वस्वर : अ, इ, उ, ऋ.

(2) दीर्घस्वर : आ, ई, ऊ.

(3) संयुक्त दीर्घस्वर : ए, ऐ, ओ, औ.

क्रमांक 1 के ऱ्हस्व स्वर इसलिए हैं कि उनके उच्चारण के समय कम समय लगता है। क्रमांक 2 के दीर्घ स्वर इसलिए हैं उनके उच्चारण में ऱ्हस्व स्वर से अधिक याने करीब दुगुना समय लगता है। क्रमांक 3 के संयुक्त स्वर इसलिए हैं कि ये दो विभिन्न स्वरों के मिश्रण से बनते हैं। इनके उच्चारण में भी दीर्घ स्वरों के समान अधिक समय लगता है। ये यों बनते हैं - अ + ए = ऐ।

(ब) व्यंजन : व्यंजनों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है। इनका उच्चारण साँस के साथ स्वतंत्र नहीं होता है। व्यंजन निम्नानुसार हैं। उच्चारण में साँस की प्रक्रिया का विचार सामने रखकर, व्यंजनों के 5 वर्ग बनाये गये हैं।

व्यंजनों के भेद : (1) स्पर्श व्यंजन :

(1) **क-वर्ग :** क, ख, ग, घ, ङ

(2) **च-वर्ग :** च, छ, ज, झ, ञ

(3) **ट-वर्ग :**ट, ठ, ड, ढ, ण

(4) **त-वर्ग :** त, थ, द, ध, न

(5) **प-वर्ग :** प, फ, ब, भ, म

ये व्यंजन कुल 25 हैं। उन के उच्चारण की विशेषता यह है कि जीभ के किसी हिस्से का स्पर्श मुख के किसी भाग को स्पर्श करता है।

(2) अंतस्थ व्यंजन : ये चार हैं। य, र, ल, व। इनके उच्चार की स्वर और व्यंजन के मझली स्थिति है। इसको अर्धस्वर भी कहते हैं। इनमें 'र' को लुंठित व्यंजन कहते हैं। इनके उच्चारण में साँस जिह्वा को टकराती है। 'ल' को पार्श्विक कहते हैं, इसके उच्चारण में साँस जिह्वा के पीछे से निकलती है।

(3) उष्म व्यंजन : श, ष, स, ह ये उष्म व्यंजन हैं। इनके उच्चारण में एक प्रकार की झनझनाहट रहती है। इनके उच्चारण में घर्षण का आभास रहता है।

(4) अनुनासिक व्यंजन : ङ्, ञ्, ण्, न्, म्- ये अनुनासिक व्यंजन है। इनका उच्चारण नासिका में होता है। लेखन में अनुनासिक व्यंजनों के बदले अनुस्वार दिया जाता है। जैसे 'खण्ड' के बदले खंड। 'मङ्गल' के बदले 'मंगल'। इन को नासिक्य व्यंजना भी कहते हैं।

(5) अल्पप्राण : स्पर्श व्यंजनों में हरएक वर्ग का दूसरा तथा चौथा व्यंजन महाप्राण कहलाता है। इनके उच्चारण में साँस के उपयोग का परिमाण अधिक है। इसलिए ख, घ, छ, झ, ठ ढ, थ ध, फ भ, ये व्यंजन महाप्राण है।

हिंदी में उपर्युक्त अक्षरों के अतिरिक्त क ख ग ज फ ड ढ ये वर्ण नुक्त लगाकर मान्य किये गये हैं। अरबी तथा फारसी ध्वनियों को लेकर उनके उच्चारण कुछ भिन्न से किये गये हैं। ये वर्ण उपर्युक्त विदेशी भाषाओं में आ जाते हैं।

मराठी भाषा में जिस तरह पूर्णानुस्वार तथा विसर्ग हैं, उसी तरह हिंदी में भी हैं। जैसे- तरंग, रंग, दु:ख, दु:सह। हिंदी की विशेषता हैं, आधा अनुस्वार याने चंद्रबिंदी - जैसे आँधी, चाँदी आदि।

उच्चारण के नियम : (1) जैसेकि इसके पहले, देवनागरी की विशेषताओं में बताया जा चुका है कि देवनागरी लिपि में जैसे लिखा जाता है, वैसे ही उच्चारण किया जाता हैं। उच्चारण में जहाँ फर्क है, वह नीचे दिया जा रहा है। उच्चारण में हिंदी भाषा का अपना ढंग है।

वर्ण के उच्चारण के समय उसके मुख से संबंधित उच्चारण स्थान को लेकर वर्ण प्रकारों के नाम निश्चित किये गये हैं, वे निम्नानुसार हैं।

वर्ण	**उच्चारण स्थान**	**प्रकार**
अ, आ, क, ख, ग, घ , ङ, ह	कंठ	कंठ्य
इ, ई, च, प, ज, झ, त्र, य, श	तालु	तालव्य
ऋ ट ठ ड ढ ण र ष	मूर्धा	मूर्धन्य
त थ द ध न ल स	दाँत	दन्त्य
उ ऊ प फ ब भ म	ओठ	ओष्ठ्य
ए ऐ	कंठ तथा तालु	कंठ-तालव्य
ओ औ	कंठ तथा ओंठ	कंठौष्ठ्य

कंठ्य : जिन वर्णों का उच्चारण कंठ से होता है, मतलब जिनकी साँस का परिणाम कंठ पर होता है उन्हें कंठ्य कहते हैं।

तालव्य : जिन वर्णों का उच्चारण तालुसे होता है, मतलब जिनकी साँस का परिणाम तालु पर होता है उन्हें तालव्य कहते है।

मूर्धन्य : जिन वर्णों का उच्चारण मूर्धा पर जिह्वा का आघात करने से होता है, उन्हें मूर्धन्य कहते हैं।

दंत्य : जिन वर्णों का उच्चारण दाँत और जिह्वा के संपर्क से होता है, उन्हें दंत्य कहते हैं।

ओष्ठ्य : जिन वर्णों का उच्चारण ओंठों से निकलता है, उन्हें ओष्ठ्य कहते हैं।

कंठतालव्य : जिन वर्णां का उच्चारण कंठ तथा तालु के सहयोग से होता है, उन्हें कंठ तालव्य कहते हैं।